Roll No : .....

Total No. of Questions : **14**] [Total No. of Printed Pages : **4**

EDE–179

B.A. B.Ed. (Ist Year) Examination, 2021

HINDI LITERATURE

Paper - II (CC-1)

(मध्यकालीन काव्य)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : 60*

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 8 = 16)**

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 4 × 5 = 20)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए(उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **4** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 8 × 3 = 24)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–अ प्रत्येक 2

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (शब्द-सीमा **50** शब्द) :

1. (i) कबीरदास भक्तिकाल की किस शाखा के कवि हैं और उनकी भाषा कैसी है ?

   (ii) प्रेमाश्रयी शाखा के किन्हीं **दो** कवियों के नाम बताइए।

(iii) जायसी की **दो** साहित्यिक रचनाओं के नाम बताइए।

(iv) सूरदास कृष्ण भक्ति के किस मार्ग के कवि हैं ?

(v) तुलसीदास की कितनी साहित्यिक रचनाएँ हैं ?

(vi) राणाजी! थे क्योंनै राखो म्हाँसू बैर-राणाजी मीरा से किस प्रकार का बैर रखते थे ?

(vii) 'भाव वही जु वही मन भायो' का क्या अर्थ है ?

(viii) गुरु नानक किसकी शरण में जाने का उपदेश देते हैं ?

खण्ड–ब प्रत्येक 4

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** पदों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

2. हम न मरै मरिहै संसारा

हैम कूँ मिल्या जियावनहारा॥

अब न मरौ मरनै मत मांना, ते मूए जिन राम न जाना

साकत मरै संत जन जीवै, भरि भरि राम रसाँइन पीवै॥

हरि मरिहै तो हम हूँ मरिहै, हरि ना मरै हँम काहू कूँ मरिहै

कहै कबीर मन मनहि मिलावा, असर भये सुख सागर पावा॥

3. अब राखहु दास भाट की लाज

जैसी राखी लाज भगत प्रहलाद की हरनाकस कारे का आज

पुनि द्रोपदी लाज रखि हरि प्रभु जी छीनत वस्त्र दीन बहुसाज

सोदामा अपरा ते रखिया, गनिका पढ़त पूरे तिंह काज

स्त्री सती गुरु सुमरण कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज।

4. बिनु गोपाल बैरनि भई कुंजै।

तब वै लता लगति तन सीतल, अब भई विषम ज्वाल को पुंजै

वृथा बहति जमुना, खग बोतल, वृथा कमल फूलनि अलि गुंजै

यह ऊधौ कहियौ माधौ सौ, मदन मारि कीन्ही हम लुंजै

'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस कौ, मग जोवत अँखियाँ भई छूंजै॥

5. जो रसना रस ना बिलानै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन

सो करनी कर नीको कर जु पै कुंज कुटीरन देहुँ बुहारन

सिद्धि समृद्धि सबै रसखानि लहौ ब्रज रेणुका अंग संवारन

खास निवास मिलै तो सही उहि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन।

6. अजहूँ न निकसै प्राण कठोर,

दर्शन बिना बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर।

चार पहर चारों युग बीते, रैन गमाई भोर।

अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहूँ रहे चित चोर।

कबहूँ नैन निरख नहि देखे, मारग चितवत तोर।

दादू ऐसे आतुर विरहणि, जैसे चंद चकोर॥

7. संतौ मगन भया मन मेरा।

अहनिशि सदा एकरस लागा, दिया दरीबैं डेरा।

कुल मर्याद भेंड सब भागी, बैठा भाठी नेरा।

जाति पाति कछु समझौ नाहीं, किसकूँ करें परेरा।

रानी प्यास आस नहि औरा, इहि मन किया बसेरा।

ल्याव ल्याव याही लय लागी, पीवैं फूल घनेरा।

सो रस मांग्या मिलै न काहू, सिर सारै बहुतेरा।

जन रज्जब तन मन दै लीया, होय धणी का चेरा॥

8. जौ लग राम नामै हित न भयो। तौ लग मेरी मेरी करता जनम गयौ॥

लागी पंक पंक लै धौवै। निर्मल न होवें जनम बिगोवै॥

भीतर मैला बाहरि चोषा। पाणी पिड पषालै धोषा॥

नामदेव कहै सुरही परहरिये। भेड पूंछ कैसे भवजल तरिये॥

9. ऊधौ मन मानै की बात।

दाख छुहारा छाँड़ि अमृत फल, विषकीरा विष खात।

ज्यौ चकोर कौ देह कपूर कोउ, तजि अंगार अघात।

मधुप करत घर कोरि काठ मैं बँधत कमल के पात।

ज्यौ पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात।

सूरदास जाकौ मन जासौ सोई ताहि सुहात॥

खण्ड–स प्रत्येक 8

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

10. निर्गुण काव्यधारा की विशेषताओं के आधार पर कबीरदास के साहित्य की समीक्षा कीजिए।

11. दादू के काव्य की काव्यगत विशेषताओं की समीक्षा कीजिए।

12. सिद्ध कीजिए कि तुलसीदास समन्वयवादी कवि हैं।

13. सूफी काव्यधारा की विशेषताओं के आधार पर जायसी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

14. भक्तिकालीन वियोगिनी कवयित्री के रूप में मीरां की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।